# उत्तराखण्ड में संगीत कला की विभूति डॉ0 पूनम जोशी

***डॉ0लक्ष्मी धस्माना**

गीत, वाद्य तथा नृत्यं त्रयं संगीत मुच्यते[1]। संगीत रत्नाकर

संगीत एक सहज आनन्द की अनुभूति के साथ एक सम्मोहन विद्या है। भारतीय संगीत में साधना का विशेष महत्व है। वीणा वादिनी सरस्वती मॉ के अनन्य साधक अपना सम्पूर्ण जीवन संगीत को अर्पित कर अपनी यश गाथायें समाज को दे गये। संगीत का सम्बन्ध भाव है। भाव संगीत की आत्मा है। विल्हेम वुन्ट नामक जर्मनी के एक शरीर विज्ञानवेक्ता का कथन है कि ''आरम्भ में नृत्य ही मानव की सम्पूर्ण अभियव्यक्ति का साधन था[2]। गीत, वाद्य तथा नृत्यं इन तीनों का अर्न्तभाव नाट्य के अन्तर्गत है। इन सभी का प्रयोजना मानव चित्त, वृत्तियों को आनन्द की ओर ले जाना है। महर्षि भरत के शब्दों में –

''सर्वोपदेश जननं नाट्यं लोके भविष्यति ।
दुखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम[3]

उत्तराखण्ड राज्य के नैनीताल जिले में डॉ0 (कुमारी) पूनम जोशी का जन्म सन् 1965 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री चन्द्रशेखर जोशी व माता का नाम श्रीमती प्रेमकला जोशी है। बाल्यकाल से ही इनके माता–पिता ने संगीत की तीसरी विद्या कत्थक, नृत्य की शिक्षा अपनी पुत्री को देने के लिये बनारस, जयपुर आदि शहर से कत्थक नष्त्य के गुरूओं को आमंत्रित किया। प्रातः काल 4 बजे से 7 बजे तक निरन्तर कई वर्षो तक इनका कत्थक नृत्य का रियाज (अभ्यास) चलता रहा। माता–पिता के संगीत के प्रति सर्मपण व त्याग से पूनम की संगीत क्षेत्र में अलग पहचान है। कत्थक, नृत्य के साथ ही आपने (वाद्य) सितार में भी निपुर्णता प्राप्त की है। 'आपने सितार की प्रारभिक शिक्षा श्री हरि संकीर्तन सभा संगीत विद्यालय नैनीताल (मान्यता प्राप्त भारतखण्डे संगीत विद्यापीठ लखनउ) में सांयकाल शिक्षा देने वाले डॉ0 देवी राय आर्या जी से प्राप्त की।' जो डी0 एस0 बी0 परिसर नैनीताल में संगीत (वाद्य, सितार) के विभागाध्यक्ष भी थे । तत्पश्चात् श्री शशि मोहन जी भट्ट जयपुर, डॉ0 रामदास जी चक्रवर्ती, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में कार्यरत। आदि इनके गुरू रहे। सितार सें एम0 ए0 म्यूजिक राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर सें प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर स्वर्णपदक प्राप्त किया। सितार में ही पी0 एच0 डी0 की उपाधि बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से प्राप्त की।

आपका वी0 हाईग्रेट क्लासिकल सितारकला, ऑल इण्डिया रेडियो, जयपुर में जून 1992 को प्रासारित हुआ। आप लखनऊ में सितार की प्रतियोगिता में प्रथम आयी। आपको 1985 में यूपी0 संगीत नाटक अकादमी लखनऊ द्वारा सुरमणी अवार्ड से सम्मानित किया गया।

1985 में ही राजस्थान संगीत नाटक अकादमी द्वारा राज्य स्तर पर प्रथम श्रेणी की कलाकार के रूप में सम्मानित किया गया। कल के कलाकार सम्मेलन में सितार एकल वादन सुर गायक समसाद, बम्बई तथा सितार एकल वादन का प्रोग्राम स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन 1986 में किया। मुम्बई, कोल्हापुर विश्वविद्यालय, नैनीताल, हल्द्वानी, जयपुर, पटना, वाराणसी, सुर साधना समिति राष्ट्रीय देशों में अहमदाबाद, मुम्बई, उदयपुर, पंजाब, अजमेर, जामा मालिया विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, में आपने अपने प्रोग्राम से संगीत प्रेमियों के हदय को झंकष्त कर ख्याति प्राप्त की।

आपने सितार में निपुर्णता प्राप्त करने के साथ–साथ प्रोग्रामिक आर्ट कत्थक में तीन वर्ष का डिप्लोमा, जयपुर केन्द्र व कत्थक में विशारद, भारतखण्डे संगीत विद्यापीठ लखनऊ से प्रथम श्रेणी में प्राप्त किया। आपने कत्थक की प्रारम्भिक शिक्षा मिस मधु सक्सेना जी से प्राप्त की। तत्पश्पात् श्री बाबू लाल जी पाटनी शिष्य स्व0 नाराण प्रसाद जी, स्व0 पंडित गौरी शंकर

*संगीत विभाग, डी0 एस0 बी0 परिसर, नैनीताल

जी व पंडित कन्हैया लाल जी (धराना जयपुर) से प्राप्त की। उ0प्र0 संगीत नाटक अकादमी लखनऊ से कत्थक में सन 1980 व 1981 में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

**नैनीताल की नई प्रतिभा–** अपनी प्रतिभा से न केवल कला प्रेमियों को प्रभावित किया बल्कि साधारण जनता भी स्तब्ध रह गयी[4]।

1984 में स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन मुम्बई में कथक नृत्य द्वारा श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध किया। पूनम जी नष्त्य शैली एक मंजी हुई नत्यांगना के रूप में

उभरकर सामने आयी। भविष्य में सर्वप्रमुख नृत्यांगना बनेंगी[5] ''

पूनम ने कत्थक मे नष्त्य नाटिका (कृष्ण राधा) कर जयपूर में समा बांधा[6]।

गुरू पूर्णिमा परः– पूनम जोशी के दरबारी शैली प्रस्तुत कत्थक नृत्य में जहॉ लखनऊ घराने की नजाकत थी, वही जयपुर घराने की कुछ खास भाव भंगिमायें थी। श्रंगारिक अदाऍ तथा उनके द्वारा प्रस्तुत तराना काफी सराहा गया[7]।

जनशक्ति पटना जुलाई 1992 द्वारा कत्थक साधना की शिखर संभावना पूनम जोशी ।

जयपूर घराने के अंश पूनम जोशी द्वारा कत्थक नष्त्य स्वामी हरिदास सम्मेलन में दृष्टिगोचन हुये[8]।

प्रथम निशा का सर्वाधिक आकर्षक कार्यक्रम उदयपुर से आई कु0 पूनम जोशी का एकल कत्थक नृत्य रहा, इस युवा कलानैत्री से नृत्य जगत को काफी आशायें है[9]। एन0 सी0 पी0 ए0 के0 गोदरेज हॉल में प्रस्तुत पूनम जोशी का कत्थक नष्त्य देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इस नृत्यांगना ने तालीम अवश्य जयपुर घराने से पायी है, किन्तु लखनऊ शैली को आंशिक रूप से अपनाने का सुन्दर प्रयास किया है। लयकारी के कार्य में जैसी पूर्णता है, उसी के अनुरूप भाव प्रदर्शन में नजाकत व भावाभिव्यंजना है। पूनम की कत्थक के बोलों की पढंत तथा उन्ही बोलों के अनुरूप अंग संचालन अत्यधिक प्रभावशाली रहा है[10]।

कत्थक नष्त्य में ख्याति प्राप्त करने के साथ आपने वाद्य सितार में भी आपने सच्ची साधना व लगन द्वारा उत्तराखण्ड का नाम गौरवान्वित किया । आपने सितार में भी प्रोग्राम अनेक राज्यों में दिये । विभिन्न अखबारों में भी आपके कार्यक्रम प्रकाशित है। पूनम जोशी ने अपने मधुर सितार वादन में गमक व मीड़ के काम को काफी खूबसूरती व तैयारी के साथ प्रस्तुत कर श्रोताओं को प्रभावित किया[11]।

''आपने सितार वादन में राग की शुद्धता का बर्ताव अन्त तक सही ढंग से बनाये रखा। वही स्वर, माधुर्य और बाज़ में चैनदारी का भी पूरा–पूरा ध्यान रखा[12]।

पूनम जोशी द्वारा मधुवन्ती की अवतारणा कार्यक्रम की एक उपलब्धि थी। यह पूनम की बहुत बड़ी विशेषता है कि मीड़ की खुबसूरती भी उनके सितार में है, और मिज़राब का चमत्कारिक प्रयोग भी इनका नृत्य पक्ष इनके सितार में भी मुखरित होता है, जबकि चमत्कारित व कठिन तिहाईयों का भी बड़ी सुगमता से प्रयोग कर जाती है। प्रोग्राम का समापन एक मर्म स्पर्शीय धुन से हुआ[13]।

पूनम जोशी ने सितार वादन राग रागेश्वरी से प्रारम्भ किया। पूनम ने न केवल अधिकार पूर्वक सितार वादन किया बल्कि सितार वादन मिठास से परिपूर्ण रहा। मीड़, सूत, कण, और आन्दोलन आदि को सहज भाव से प्रस्तुत कर संगीत प्रेमियों का दिल जीता[14]। पं0 शशि मोहन भट्ट की शिष्या डॉ0 पूनम जोशी ने कुम्भा संगीत परिषद, उदयपुर में सितार वादन प्रस्तुत कर समा बांध दिया[15]।

इस प्रकार पूनम ने देश –विदेश में भी अपनी कला का प्रदर्शन कर भारत वर्ष का नाम गौरवान्वित किया। पूनम जोशी की मातृ भूमि उत्तराखण्ड के निवासियों के लिये प्रेरणा का श्रोत हैं। आप वर्तमान समय में जयपुर (उदयपुर) में संगीत विभाग की विभागाध्यक्षा हैं।

**विषय ग्रंथ सूची**


1. लेखक– विष्णु नारायण भारतखण्डे, पुस्तक संगीत विशारद, पृष्ठसं0 36, प्रकाशक –संगीत कार्यालय हाथरस उ0प्र0
2. लेखक–लक्ष्मी नारायण गर्ग, कत्थक नृत्य, चतुर्थ संस्करण जनवरी 1981, पृष्ठसं0 12,
3. लेखक– लक्ष्मी नारायण गर्ग, कत्थक, नृत्य, संगीत विशारद, पृष्ठ सं0 13,
4. व्लिट्ज, मुम्बई 18जून 1983
5. दैनिक मध्य प्र0 जनवरी 1985
6. नवभारत टाईम्स, जयपुर 12 मार्च 1986
7. समाचार पत्र आज, पटना 10 जुलाई 1990
8. टाइम्स ऑफ इण्डिया मुम्बई 3 जून 1992
9. तरूपा मित्र, भदोही (उ0प्र0) 26 फरवरी 1997
10. नवभारत टाइम्स, मुम्बई 27 अप्रैल 1997
11. राजस्थान पत्रिका, जयपुर 20 जनवरी 1992
12. राजस्थान पत्रिका, जयपुर 18जनवरी 1993
13. दैनिक जागरण, नई दिल्ली 24 फरवरी 1994
14. दैनिक नव ज्योति, जयपुर 22 अक्टूबर 1996
15. राजस्थान पत्रिका, उदयपुर 12 जनवरी 1997